7

मातृभाषा और शिक्षा तर्क एवं चुनौतियाँ

सुरभि चावला*

शोध एवं अनुसंधान यह बात सिद्ध कर चुके हैं कि अवधारणाओं की समझ मातृभाषा एवं घर की भाषा में बेहतर तरीके से एवं जल्दी बनती है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* भी औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के बुनियादी चरण से लेकर मिडिल चरण तक शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा की अनुशंसा करती है। यदि कक्षा में मातृभाषा को स्थान दिया जाए तो बच्चे प्रफुल्लित होकर अपनी बातें सभी के साथ साझा करते हैं और अपनी अभिव्यक्ति को सशक्तता प्रदान करते हैं। प्रस्तुत लेख शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के महत्व को बताता है और अभिभावकों की मातृभाषा के संदर्भ में उपजी भ्रांतियों को दूर करने की दिशा में उठाए गए प्रयास पर रोशनी डालता है।

भौगोलिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक विविधताओं से परिपूर्ण एवं गौरवशाली इतिहास वाले हमारे देश भारत की राजधानी का एक ज़िला है उत्तर-पश्चिम। इसी जिले की एक बस्ती जहाँगीरपुरी में स्थित राजकीय विद्यालय की कक्षा तीन में जनवरी, 2020 का प्रसंग है। किसी भी शहर को विश्वस्तरीय गुणवत्ता के मानकों तक पहुँचाने का सपना दिखाने वाले आधुनिक शहर योजनाकार इस बस्ती को आर्थिक विपन्नता, बेबसी और असभ्य संस्कृति का पर्याय मानते हैं पर यह बस्ती भाषिक सांस्कृतिक सम्पन्नता का बेजोड़ घर है। झाँगी, उर्दू, बन्नूवाली, पंजाबी, सिंधी, अवधी, मैथिलि, उड़िया, बांग्ला और हिंदी आदि भाषाओं की गूँज यहाँ सुनाई देती है। भाषिक समृद्धता की पर्याय इस बस्ती के एक राजकीय विद्यालय में कक्षा तीन का दृश्य है— जहाँ अध्यापिका बहुत ही मुस्तैदी से बच्चों को 'जल चक्र' की अवधारणा समझा रही हैं। जैसा कि हर कक्षा के आखिरी पलों में विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने की परिपाटी है, यहाँ भी विद्यार्थियों से पूछा जाता है कि आज की कक्षा में उन्होनें जो भी समझा है, बताएँ। कक्षा में सन्नाटा छा जाता है।

* *शोधार्थी*, जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आपस की फुसफुसाहट शांत हो जाती है। किसी भी विद्यार्थी की ओर से उत्तर देने के प्रति तत्परता या रुचि नहीं दिखाई जा रही है। संभवतः आज वे दो-चार विद्यार्थी जो आमतौर पर अग्रिम पंक्ति में बैठते हैं और हर विषय में उत्तर देने का भाव रखते हैं, वे आज अनुपस्थित हैं। किसी भी विद्यार्थी से किसी भी तरह की प्रतिक्रिया न पाकर अध्यापिका कुछ परेशान सी हो उठती है, उसकी परेशानी से उभरी लकीरें उसके मानस की उथल-पुथल को साफ़-साफ़ रेखांकित कर रही हैं। पाठ पढ़ा देने के बाद विद्यार्थियों की ओर से आने वाली समवेत आवाज़ 'मैम जी समझ आ गया' की अनुपस्थिति किसी भी अध्यापक के लिए हैरानी परेशानी का सबब बन सकती है।

तभी अचानक कक्षा की अंतिम पंक्ति से आवाज़ आती है— "मैम जी! अपनी तरियों बता डालूँ जल चक्कर क्या है?"

अध्यापिका की सहमति की प्रतीक्षा किए बिना विद्यार्थी खड़े होकर बोलना शुरू करती है— "जी मैम जी! जे बरे-बरे पोखरा देखे हैं न। बाको जल सूरज देबता के ताप से कभी तो सूख-सूख जावे तो कभी भाप बनके सगरा के ऊपर चला जावे। अब जेयी भाप जबरदस्त टक्कर मार के चाहे तो पर्बतो को टकरा ले चाहें आपस में, बस झब्बर-झब्बर कर फिर से बरस-बरस जाए और सब के सब जोहड़-पोखर फिर से लब-लब कर भर जावें। मैम जी जेई जल चक्कर है न!"

कक्षा 3 में बैठे सभी विद्यार्थी 'जल चक्कर' की अवधारणा को 'अपने तरियों से' बताने वाली विद्यार्थी के आत्मविश्वास भरे संप्रेषण कौशल से अभिभूत थे, साथ-साथ अध्यापिका की सकपकाहट को भी भाँप पा रहे थे। अध्यापिका ने कक्षा से बाहर जाना मुनासिब समझा और जाते-जाते कह गयी— "बच्चे! तुमने एकदम सही समझा। 'जलचक्र' यही है। यहाँ क्लास में तो चल जाएगा ऐसे समझाना! पर जानते हो एग्ज़ाम में ऐसे लिखने पर क्या मिलेगा?"

अभी कुछ देर पहले अपनी तरह से जल चक्र की अवधारणा समझाने वाली विद्यार्थी की पहल से अचंभित और प्रभावित हुए विद्यार्थियों की आँखों में अपनी भाषा के इस्तेमाल करने की रोशनी जगमगायी थी। वह पल भर में ही बुझ गई।

आखिर ऐसा क्यों हुआ?

अध्यापिका ऐसे किस द्वंद से जूझ रही थी कि वह बच्ची द्वारा विषय की सही समझ बना पाने और सही से संप्रेषित कर पाने के बावजूद भी बच्ची की सराहना नहीं कर पाई अपितु उसे मातृभाषा के प्रयोग के प्रति निरुत्साहित किया?

वे कौन सी चुनौतियाँ हैं जिनका सामना करने में अध्यापक और अभिभावक कतराते हैं और मातृभाषा को कक्षा में सही स्थान नहीं दे पाते हैं?

भाषा और समझ का बहुत गहरा संबंध है। समझ और भाषा का पारस्परिक संबंध कुछ इस प्रकार का है जैसे कि हवा और उसकी तरंगें। घटनाओं-परिघटनाओं आदि के प्रति समझ मातृभाषा यानी कि अपनी ही भाषा में आकार लेती है। बच्चों की अपनी भाषा उन्हें सार्थक अवधारणाएँ बनाने, संबंधों का संजाल बुनने, अपने अनुभवों को सार्थकता प्रदान करने, अपने विचारों-भावों को आकार देने का माध्यम बनती है। बच्चों की अपनी भाषा की सरंचना उनके मस्तिष्क में पहले से ही है। अवधारणाएँ उनकी स्वयं

© NCERT not to be republished

की भाषा में बनती हैं, पर वे कौन से कारण हैं जिनके रहते अभिभावक पूर्व-प्राथमिक व प्राथमिक स्तर से ही अपने बच्चों की शिक्षा मातृभाषा में न दिलाकर अंग्रेज़ी भाषा में दिलाने का लोभ पाले रहते हैं और अध्यापक भी अपेक्षा करते हैं कि बच्चे कक्षा और विद्यालय परिसर में विद्यालय की भाषा का ही प्रयोग करें न कि अपने घर की भाषा का।

आज़ादी के बाद के पिछले सभी शिक्षा संबंधी अभिलेखों में प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर समझ के माध्यम के रूप में मातृभाषा को लागू किए जाने की अनुशंसाएँ की गई हैं। बच्चों को विषयवस्तु के प्रति समझ बनाने में सहायक उनकी अपनी भाषा के प्रयोग को महत्व दिया गया है।

शिक्षा आयोग 1964–1966 व *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968* ने पढ़े-लिखे व आम जनता के बीच की खाई को पाटने के लिए स्कूली शिक्षा में मातृभाषा के प्रयोग की बात कही। 1986 की शिक्षा नीति ने भी भाषा संबंधी मुद्दों पर चर्चा की और यह नीति उच्च शिक्षा के स्तर पर भी क्षेत्रीय भाषा को माध्यम भाषा के रूप में इस्तेमाल करने पर ज़ोर देती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1988 व *2000* में भी यह प्रस्ताव दिया गया कि 'स्कूली शिक्षा के दौरान सभी स्तरों पर या कम से कम आरंभिक स्तर तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा हो।'

इसके बाद *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005* द्वारा भी सुझाव दिया गया कि 'विद्यालय स्तर पर विशेषकर प्राथमिक स्तर की शिक्षा में अनुदेशों का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए और अब *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* भी पुरज़ोर तरीके से सुझाती है कि भारत की सामाजिक समरसता बहुभाषिता पर आधारित है और बच्चों की समझ उनकी मातृभाषा में बनती है, अतः औपचारिक-अनौपचारिक शिक्षा का माध्यम बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा होनी चाहिए।

विद्यालयी शिक्षा के आरंभिक स्तर पर मातृभाषा को माध्यम के रूप में लागू करने के पीछे केवल एक तर्क नहीं है कि यह समझ बनाने में सहायक है, अपितु ये तर्क भी महत्वपूर्ण हैं कि मातृभाषा का प्रयोग लोगों को राष्ट्र के पुनर्निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद करता है। ज्ञान का प्रचार प्रसार अभिजात्य वर्ग की गिरफ़्त में ही न रहकर आमजन तक पहुँचता है। मातृभाषा में शिक्षा अधिक से अधिक लोगों को शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास के लिए समुचित अवसर प्रदान करती है।

दस्तावेज़ों और भाषा विज्ञान के क्षेत्रों में किए गए तमाम शोध अनुसंधानों के सुझावों के बाद भी घर की भाषा और विद्यालय की भाषा में अंतर बढ़ता चला गया और अंग्रेज़ी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं की आपस में भी आवाजाही टूटने सी लगी। दूसरी भाषा (विशेषकर अंग्रेज़ी भाषा) में पढ़ाई करने से बच्चों पर मानसिक बोझ कुछ इस सीमा तक बढ़ा कि बच्चों की अपनी समझ, उनकी अपनी अभिव्यक्ति दब कर रह गई।

इन सबके पीछे जहाँ एक ओर तरह-तरह की जकड़बन्दियों में कैद विद्यालयी व्यवस्था ज़िम्मेदार है तो दूसरी ओर अभिभावकों की नासमझी भी बहुत बड़ी सीमा तक उत्तरदायी है। अभिभावकों की एक बहुत बड़ी संख्या का यह मानना है कि यदि

© NCERT not to be republished

उनके बालकों को अंग्रेज़ी में नहीं पढ़ाया गया तो हमेशा-हमेशा के लिए पिछड़े रह जाएँगे। उन्हीं की चाहतों का परिणाम है कि सरकारें अपने विद्यालयों में भी अंग्रेज़ी माध्यम वाले अनुभाग खोलती जा रही है।

विश्व बैंक के अनुदान से चलने वाले कार्यक्रम 'ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.)' में बच्चों को उनके सांस्कृतिक परिवेश से जुड़े खेल गीतों के सहारे पढ़ना-लिखना सिखाना शुरू किया तो अधिकांश अभिभावकों ने विद्यालयों से अपने बच्चों को निकालना आरम्भ कर दिया। उनका मानना था कि सरकार हम गरीबों को गरीब और पिछड़ा ही बने रहने देना चाहती है। इसलिए अंग्रेज़ी या मानक भाषा में पढ़ाई न करवाकर हमारी अपनी ही भाषा में पढ़ाई करवा रही है।

अभिभावकों के इस तर्क पर उनके साथ संवाद करना चाहिए था पर ऐसा नहीं हुआ। अब यदि अभिभावकों के द्वंद्व को एक ओर रखें और अध्यापकों से बात करें तो वे भी मानक भाषा में ही पढ़ाने के पक्ष में हैं। वे भी चाहते हैं कि विद्यार्थी कक्षा में सलीकेदार भाषा का प्रयोग करे यानी कि वे बच्चों के घर की भाषा को सुसंस्कृत या सभ्य भाषा का दर्जा नहीं देते हैं। वे कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिक संस्कृति को समृद्ध संसाधन के रूप में न देखते हुए उसे एक व्यवधान के रूप में देखते हैं। उन्हें लगता है कि वे सभी विद्यार्थियों को अपनी-अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने का अवसर देंगे तो यह अराजकता व अनुशासनहीनता को ही जन्म देगा। जबकि वे इस बात से अनभिज्ञ नहीं हैं कि भाषा का सरल से सरलतम रूप अख्तियार करने से बच्चे जटिल से जटिल अवधारणाओं को भी सरलतापूर्वक समझ लेते हैं।

आज समाज को ज़रूरत है ऐसे प्रयासों की जो शिक्षा के औपनिवेशिक इतिहास की विरासत से उत्पन्न मानसिक और सामाजिक जकड़न को दूर कर सकें। ये प्रयास सिर्फ़ क़ानून बना देने या संस्थागत सहयोग के आधार पर सफलीभूत नहीं हो सकते। इसके लिए लोक अभियान की ज़रूरत है। समाज के हर तबके के साथ शिक्षा संबंधी भाषा नीति पर चर्चाएँ आयोजित होनी चाहिए। संचार माध्यमों की भूमिका यहाँ पर बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाती है। मातृभाषा के सवाल पर सोचने और संवाद आरम्भ करने, उसे दूर तक ले जाने में शिक्षा से जुड़ी संस्थाओं, संगठनों एवं जन संचार माध्यमों को उत्साह से काम करना होगा।

मातृभाषा के सवाल को एक संवादपरक चेतना के दायरे में लाकर ही किसी परिवर्तन की आशा की जा सकती है।

यहाँ पर मातृभाषा के संदर्भ में अभिभावकों के दृष्टिकोण के बारे में एक महत्वपूर्ण बात पर रोशनी डालना ज़रूरी लग रहा है। आमतौर पर कुछ अभिभावक इस सिद्धांत से भी परिचित नहीं हैं कि पठन क्षमता विकसित एवं संवर्द्धित करने के लिए पाठ्यपुस्तकों के अलावा भी तरह-तरह की पुस्तकें बच्चों को देनी चाहिए। उन्हें लगता है कि पाठ्यपुस्तकें अपने-आप में पर्याप्त हैं और इन्हें पढ़ लेना ही असली पढ़ाई है। दरअसल ऐसा इसलिए है कि हमारे समाज में बहुत से लोगों के लिए पुस्तकें एक 'साधन' मात्र हैं। उनका साधनवादी दृष्टिकोण किताबों के प्रति यह सोच रखता है कि 'अमुक किताब को पढ़कर क्या

© NCERT not to be republished

फायदा मिलने वाला है'। ऐसी साधनवादी दृष्टि के रहते अभिभावक बच्चों को पसंद आ सकने वाली, सरस भाषा में लिखी पुस्तकें खरीदने की पहल करते ही नहीं हैं और बच्चे न केवल अच्छा साहित्य पढ़ने से वंचित रह जाते हैं बल्कि उनके पठन कौशल विकसित होते होते मुरझा जाते हैं, उत्साही पाठक बनने की राह अवरुद्ध हो जाती है।

मातृभाषा में पढ़ाई का यह चिंतन यहीं समाप्त नहीं हो जाता। अनुभवों के आधार पर यह तो सिद्ध हो ही गया कि अभिभावकों की एक बहुत बड़ी संख्या इस बात से अनभिज्ञ है कि यदि उनके बच्चों को विद्यालय में उनकी अपनी मातृभाषा में पढ़ने के अवसर मिलेंगे तो वे न केवल कुशल पाठक बनेंगे बल्कि उनकी आलोचनात्मक क्षमता एवं कौशलों का भी उन्नयन होगा। अब सवाल यह है कि क्या उन्हें अनभिज्ञ ही रहने दिया जाए या विद्यालय स्तर पर कुछ ऐसे कदम उठाए जाएँ जिससे उन्हें मातृभाषा और समझ के पारस्परिक संबंधों के प्रति कुछ सटीक तथ्य जानने के मौके मिल सकें।

सौभाग्य से प्रधानाचार्य की स्वीकृति एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के प्रयासों से जहाँगीरपुरी 'ए' ब्लॉक के अभिभावकों के साथ संवाद करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य यह था कि अभिभावकों का ध्यान इस तरफ़ दिलाया जाए कि यदि उनके बच्चों को घर की भाषा में बात करने व लिखने-पढ़ने के मौके दिए जाते हैं तो वे समाज में किसी भी तरह से पिछड़ेंगे नहीं क्योंकि पढ़ाई जाने वाली बातों पर उनकी पकड़ मज़बूत होगी।

इस गोष्ठी में 112 अभिभावकों ने भाग लिया। उन्हें *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की मातृभाषा संबंधी अनुशंसाओं से बहुत ही सरल शब्दों में परिचित करवाया गया और उनके विचार जाने गए। सभी अभिभावकों ने इन अनुशंसाओं को एक सिरे से नकार दिया। उनके आक्षेप और प्रश्न थे—

- "क्या सरकार सभी स्कूलों में अंग्रेज़ी में पढ़ाई बंद कर रही है? प्राइवेट स्कूलों में बच्चे अंग्रेज़ी पढ़ें और हमारे बच्चे सरकारी स्कूलों में घरेलू भाषा में पढ़ेंगे तो एकदम फिसड्डी नहीं रह जाएँगे? जैसे हम पिछड़े रह गए वैसे ही हमारे बच्चे भी नौकर-चाकर बन कर ही रह जाएँगे।"
- "दुनिया भर का काम-काज अंग्रेजी में होता है। हमारे घर की बोलचाल की जुबान में तो ज्ञान की कोई बात न सुनी न पढ़ने को मिलेगी तो बच्चों को ज्ञान कहाँ से मिलेगा। ज्ञान की तो अपनी साफ़-सुथरी भाषा होती है तो हमारे बच्चे सुथरी भाषा में पढ़ाई क्यों न करें?"

अभिभावकों की ओर से इस तरह की अनेक प्रतिक्रियाएँ सामने आयीं, जिससे स्पष्ट हुआ कि वे—

- अपने घर में बोली जाने वाली भाषा को स्तरहीन भाषा मानते हैं और क्लिष्ठ शब्दों वाली संस्कृतनुमा हिंदी एवं अंग्रेज़ी को श्रेष्ठ मानते हैं।
- वे यह भी मानते हैं कि उनकी भाषा में ज्ञान की बातें उपलब्ध नहीं हैं। उनकी भाषा तो बस बोल-चाल के लिए ही है।
- वे इस बात के पक्षधर थे कि यदि भविष्य में अच्छी नौकरी पानी है तो अंग्रेज़ी में ही पढ़ना होगा। उन्होनें तरह-तरह के तर्क देने चाहे कि अंग्रेज़ी न आने के कारण ही आज वे गरीबी व निःशक्त जीवन जीने के लिए विवश हैं।

© NCERT not to be republished

- अभिभावकों ने आक्षेप लगाने के अंदाज़ में कहा कि अगर हम गरीब लोग अपने बच्चों को अंग्रेज़ी वाली पढ़ाई करवाना चाहते हैं तो इसमें किसी को भी पीड़ा क्यों हो रही है? क्या दुनिया नहीं चाहती कि गरीब के बच्चे भी अच्छे से पढ़ें-लिखें और ऊँची नौकरियों पर जाएँ?
- बहुत से अध्यापकों ने कहा कि सिर्फ़ ज्ञान हासिल और अच्छी जीवनशैली के लिए ही नहीं अंग्रेज़ी और सुथरी हिंदी ज़रूरी है। अंग्रेज़ी पढ़ने और बोलने से शान बढ़ती है। आस-पास के लोग इज्ज़त से देखते हैं।
- एक महिला ने बताया कि अब से उसका बेटा अंग्रेज़ी वाले स्कूल में जाने लगा है, मोहल्ले में उसका सम्मान बढ़ गया है। उसने दबी आवाज़ में यह भी स्वीकार किया कि अब उसका बेटा कुछ संकोची सा हो गया है और डरा-सहमा रहता है।
- दबी आवाज़ में बोला गया यह वाक्य गोष्ठी आयजकों के लिए एक ऐसा सिरा था जिसे पकड़कर अभिभावकों के संज्ञान में यह बात लाना आसान था कि यदि अपने घर या मातृभाषा में शुरूआती पढ़ाई पढ़े तो क्या बच्चे के डर को दूर किया जा सकता है?
- सभी अभिभावकों को सोचने के लिए अभिप्रेरित किया कि वे जानें और समझें कि उनके बच्चे वास्तव में कितना ज्ञान हासिल कर पा रहे हैं?

यदि एक छोटी सी आवासीय बस्ती के अभिभावकों का दृष्टिकोण नकारात्मक है या इस तरह से कहें कि मातृभाषा को माध्यम के रूप में लेने की समझ बहुत कच्ची है तो प्रत्येक विद्यालय को अपने-अपने स्तर पर अभिभावकों के साथ संवाद स्थापित करना होगा और यह कार्य मात्र एक या दो गोष्ठियों के आयोजन भर से संपन्न नहीं होगा। इसके लिए सतत रूप से चर्चाएँ करनी होंगी तभी *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसाएँ साकार रूप ले पाएँगी।

शैक्षिक निहितार्थ

- मातृभाषा में पढ़ाने के महत्व की समझ बनाना;
- बहुभाष्यता का विद्यालय के पर्यावरण में महत्व की समझ बनाना;
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में प्रयोग;
- पूर्व सेवा शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान छात्रों में मातृभाषा एवं बहुभाष्यता की समझ बनाना।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished